an>

Title: Issue regarding problems faced by Indian newspaper manufacturers .

डॉ. उदित राज (उत्तर-पश्चिम दिल्ली) : महोदय, मैं आपका ध्यान आकर्Âिात करना चाहता हूँ कि जो इन्डियन न्यूज़पेपर मैनुफैक्चरर्स हैं, वे सारी कम्पनियाँ इस समय तबाह होने वाली हैं और तबाह हो भी रही हैं। उसकी वजह है कि जो न्यूज़पेपर पब्लिशर्स हैं, इनको बाहर से न्यूज़पेपर इम्पोर्ट करने की इजाजत है और जीरो परसेंट ड्यूटी पर और हो यह रहा है कि जो अमेरिका से ग्लोबल रेट है 550 यू.एस.डॉलर पर मीट्रिक टन, लेकिन उसमें और इन्वॉइस हो रही है, कहीं 600, कहीं 650, कहीं 700 और दूसरे देशों के द्वारा बिलिंग की जा रही है। ओवर इन्वॉइसिंग का जो पैसे का डिफरेन्स है, उससे मनी लॉन्डरिंग की जा रही है और जो एक्चुअल न्यूज़पेपर यूजर हैं। जैसे यहाँ के न्यूज़पेपर यूज़र्स हैं, एक्चुअल मैनुफैक्चरर्स हैं, इनके बीच सेल परचेज़ होना चाहिए। ऐसा न करके ग्रे मार्केट में जा रहा है जिससे यहाँ के जो न्यूज़पेपर मैनुफैक्चरर्स हैं, वे बरबाद हो रहे हैं, मेक इन इंडिया का कंसैप्ट भी बरबाद हो रहा है। मैं आपके माध्यम से कामर्स मिनिस्ट्री से अनुरोध करना चाहता हूँ कि जीरो ड्यूटी फैसिलिटी विदड्रा की जाए और एक्चुअल ओनर्स और एक्चुअल न्यूज़पेपर्स को ही सेल किया जाए, एलाउ किया जाए।

HON. DEPUTY-SPEAKER:

Shri Nishikant Dubey is permitted to associate himself with the concern raised by Shri Udit Raj.